Dainik Bhaskar (Indore), 13th November 2025, Page-06

LECTURE

आईआईटी इंदौर में ब्राज़ील से आए वेदांत के शिक्षक पद्मश्री आचार्य जोनास मसेट्टी का व्याख्यान

योग व आयुर्वेद की तरह वेदांत को भी विश्व में मान्यता मिले

सिटी रिपोर्टर • इंदौर

आज योग हिन्दू धर्म से आगे निकल गया है। वेस्टर्न वर्ल्ड में सभी जानते हैं कि योग और उसके फायदे जानते हैं। इसी तरह आयुर्वेद को भी पूरी दुनिया ने अपना लिया है, पर वेदांत यानी वेदों के सार को आज भी हिन्दू धर्म से जोड़कर देखा जाता है। धर्म के कॉन्सेप्ट को दोबारा परिभाषित करने की जरूरत है क्योंकि संस्कृति के शुरू होने से पहले हम सिर्फ इंसान थे इसलिए मानवता ही पहला धर्म है। हमें वेदांत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए उनकी भाषा में बात करनी होगी। बॉलीवुड फिल्मों के जरिए भी हम वेदांत के ज्ञान को नई पीढ़ी तक पहुंचा सकते हैं। यह बात ब्राजील से आए वेदांत के अध्येता एवं शिक्षक

पद्मश्री आचार्य जोनास मसेट्टी ने आईआईटी के कैंपस में आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास द्वारा 'अद्वैतः भावी विश्व का दर्शन' विषय पर एक दार्शनिक व्याख्यान में कही। उन्होंने कोयंबटूर के आर्ष विद्या गुरुकुलम् में वर्षों तक वेदांत के गहन अध्ययन के बाद ब्राजील के रियो डी जेनेरो स्थित विश्व विद्या गुरुकुलम् की स्थापना की। यहां अब तक ढाई लाख से ज्यादा स्टूडेंट्स को वेदांत का अध्ययन कराया जा चुका है। आचार्य जोनास ने कहा, भारत में वेदांत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए कई गुरुकुल हैं, जहां मेरे जैसे विदेशी को भी अच्छी शिक्षा मिली पर आज दुनियाभर में मेहनत करके पैसे कमाने और उससे खुशी प्राप्त करने की वेस्टर्न फिलॉसफी तेजी से फैल चुकी है। लोगों को लगता है कि अध्यात्म की रिटायरमेंट के बाद प्रैक्टिस करना चाहिए, जबकि यह जीवन जीने की कला है। इसके जरिए पूरी जिंदगी सुखपूर्वक बिता सकते हैं।

संगीत प्रस्तुति : सांस्कृतिक सत्र में कर्नाटक संगीत के विश्वप्रसिद्ध कलाकार राहुल आर वेल्लाल और उनकी टीम ने प्रस्तुति दी। इस अवसर पर आईआईटी के कार्यवाहक निदेशक प्रो. संदीप चौधरी, भारतीय ज्ञान परंपरा के राष्ट्रीय समन्वयक प्रो. गण्टि एस मूर्ति भी उपस्थित थे।

अध्यात्म ही वास्तविक शांति का मार्ग

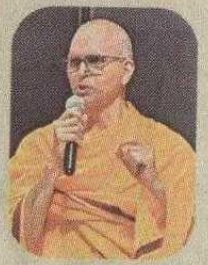

इस मौके पर अद्वैत आश्रम, मायावती के अध्यक्ष और रामकृष्ण मिशन परंपरा के वरिष्ठ संन्यासी स्वामी शुद्धिदानंद ने कहा कि आज दुनियाभर में कैपिटलिज्म, कम्युनिज्म, रेशनलिस्म जैसी कई आइडियोलॉजी चल रही है। युवाओं को लगता है कि इन्हें फॉलो करके वे अपने जीवन में खुशियां ला सकते हैं पर क्या यह वाकई हमें वेलबीइंग देती है? सच्चाई यह है कि दुनिया के सबसे विकसित देशों के नागरिक सबसे ज्यादा मानसिक रूप से परेशान हैं। अध्यात्म ही मानवता के लिए वास्तविक शांति और प्रगति का मार्ग है।